॥ श्री अग्रसेन जयते ॥

श्री अग्रसेन जयन्ती गीतमाला

: : संपादक मंडल : :

किशनलाल जिंदल | राम अवतार गोयल | रमेशचन्द्र जिंदल

★

: : प्रकाशक : :

श्री अग्रसेन साहित्य प्रचार समिति

नसीराबाद (राज०)

प्रथम पुष्प
१०००

श्री अग्रसेन जयन्ती
सं. २०४०
दि० ७-१०-८३

मूल्य
५० पैसे

: कार्यकारिणी समिति :

संरक्षक

वकील श्री कृष्ण जिंदल जयपुर

परामर्मदाता

मा. मदनलाल गर्ग **डा. पन्नालाल गुप्ता 'अनन्त'**

अध्यक्ष

किशनलाल जिंदल

उपाध्यक्ष

राजेन्द्र प्रसाद गर्ग

महामन्त्री

राम अवतार गोयल

मन्त्री

दिनेश कुमार गर्ग

वित्त मन्त्री

रमेश चन्द्र जिन्दल

प्रचार मन्त्री

द्वारका प्रसाद ऐरन

सदस्य

हंसराज गोयल **मोहनलाल सांघी**

प्रिय अग्रवाल बन्धुओं को सहर्ष सूचित किया जाता है कि प्रातः स्मरणीय महाराजा श्री अग्रसेनजी की पावन जयन्ति के उपलक्ष में हम इस वर्ष श्री अग्रसेन गीतमाला का प्रकाशन कर रहे हैं जिसमें नगर के लोक कवि स्व० छगनलालजी मांडव्य, अजमेर के कवि श्री त्रिलोक गोयल व अन्य राष्ट्रस्तरीय अग्रवाल कवियों की रचनाओं का संकलन है । आशा है पाठकों को रुचिकर लगेगी । यह समिति का प्रथम प्रयास है । समिति आर्थिक सहयोग देने वाले महानुभावों का आभार प्रदर्शित करती है । तथा पाठकों से सुझाव देने का सादर निवेदन करती है ।

—सम्पादक मण्डल

: कार्यकारिणी समिति :

संरक्षक

वकील श्री कृष्ण जिंदल जयपुर

परामर्मदाता

मा. मदनलाल गर्ग **डा. पन्नालाल गुप्ता 'अनन्त'**

अध्यक्ष

किशनलाल जिंदल

उपाध्यक्ष

राजेन्द्र प्रसाद गर्ग

महामन्त्री

राम अवतार गोयल

मन्त्री

दिनेश कुमार गर्ग

वित्त मन्त्री

रमेश चन्द्र जिन्दल

प्रचार मन्त्री

द्वारका प्रसाद ऐरन

सदस्य

हंसराज गोयल **मोहनलाल सांघी**

प्रिय अग्रवाल बन्धुओं को सहर्ष सूचित किया जाता है कि प्रातः स्मरणीय महाराजा श्री अग्रसेनजी की पावन जयन्ति के उपलक्ष में हम इस वर्ष श्री अग्रसेन गीतमाला का प्रकाशन कर रहे हैं जिसमें नगर के लोक कवि स्व० छगनलालजी मांडव्य, अजमेर के कवि श्री त्रिलोक गोयल व अन्य राष्ट्रस्तरीय अग्रवाल कवियों की रचनाओं का संकलन है । आशा है पाठकों को रुचिकर लगेगी । यह समिति का प्रथम प्रयास है। समिति आर्थिक सहयोग देने वाले महानुभावों का आभार प्रदर्शित करती है । तथा पाठकों से सुझाव देने का सादर निवेदन करती है ।

—सम्पादक मण्डल

धन्यवाद

धन्य है आज का शुभदिन, नया उत्साह दिखलाना।
तुम्हारा जाति-सेवा के लिये, बढ़ते चले आना॥
बुजुर्गो, चौधरी, पंचों, सुधारक औ सभावादी।
मिटा कर फूट आपस की, परस्पर प्रेम बरसाना॥१॥
मिलो भाई से फिर भाई, दिलों से द्वेष धो डालो।
उपस्थित जाति-गंगा है, सुअवसर चूक मत जाना॥२॥
जगत में जाति-जीवन भी तभी तक जगमगायेगा।
हो जब तक पूर्व पुरुषों को जयन्ति मान गुण गाना॥३॥
यही है चिन्ह जीवन का, कभी अवनत कभी उन्नत।
कभी चढ़ना, कभी गिरना व गिरकर फिर संभल जाना॥४॥
मनाया जाय श्रद्धा से, अटल प्रति वर्ष यह उत्सव।
विनय 'मांडव्य' की मित्रों न टालमटोल कर जाना॥५॥

जयन्ती - गीत

श्री अग्रसेन के वंशज हैं, यो 'अग्रवाल' कहलावें हम।
उस वीर हमारे पुरखा की, सानन्द जयन्ति मनावे हम॥टेर॥
है सुदिन आज का अय मित्रों, उपलक्ष में इसके मेल करें।
आपस का बैर-विरोध हटा, मिल प्रेम प्रवाह बहावें हम॥१॥
व्यापार करें, खेती कर लें, या पेट ग्वाल बन कर भर लें।
हे नाथ पाप के पैसे पर, नीयत नहिं कभी डिगावें हम॥२॥
हर जगह पाठशालाऐं खोल, विद्या का पूर्ण प्रचार करें।
अनिवार्य रूप से अग्रवाल, बच्चों को अवश पढ़ावें हम॥३॥
ब्याह शादी और नुगते में, हो लक्ष्य हमारा कमखर्ची।

धन दीन-दुखी-जन-सेवा में, लाजिम है लाख लुटावें हम ।।४।।
जिनके पौरुष से चंवर छत्र, हम अब तक धारण करते हैं ।
उस वीर अग्र-नर-नायक की, गौरव-गुण-गाथा गावें हम ॥५।।
समयानुकूल ये रीति रसम, हर समय बदल दी जाती है ।
हटधरमी तज बद रस्म हटा, 'मांडव्य' सुरीति चलावें हम ।।६।।

केसरिया झंडा

प्यारे झंडे को ऊंचा उठावो । पूर्व पुरुषों का डंका बजाओ ।'टेर।।
झंडा केसरिया रंग का हमारा । अग्र-वीरो को प्राणों से प्यारा ।।
इसके नीचे सुखी हम रहे हैं । दुःख आये सो हंस कर सहे हैं ।।
अग्रवालों इसे सर झुकावो । पूर्व पुरुषों का डंका बजावो ।।१।।
इसकी छाया में फूले फले हो । संगठन भी इसी के तले हो ।।
द्वेष दुर्गुण बुरे भाव सारे । स्थान पावें न दिल में हमारे ।।
प्रम-गंगा परस्पर बहावो । पूर्व पुरुषों का डका बजाओं ।।२।।
मान है ये हि ग रव हमारा । सर झुकाता इसे वंश सारा ।।
छत्रधारो का है ये निशाना । अपने झड को ऊचा उठाना है ।।
वीरो तुम भी इसे ना भुलावो । पूर्व पुरुषों का डका बजावो ।।३।।
जाति जो अपने बल पर खड़ी है । समझी जाती वह सबसे बड़ी है
मान है उसका जग में सवाया । जिसने दृढ़ता से झंडा उठाया ।।
अब तो चेतो 'छगन' बल बढ़ावो । पूर्व पुरुषों का डंका बजावो ।.४।।

लावनी

श्री अग्रसेन महाराज आज दिन थांको ।
जन्मोत्सव रह्या मनाय खुशी दिल म्हाँको ।।टेर।।
मिल अग्रवाल सरदार सकल नर-नारी ।
सानन्द जयन्ती-सभा करन की धारी ।।

मंडप अति सुघड़ सजाय करी सब त्यारी।
पंडितजी को बुलवाय हवन कियो जारी।।

'स्वाहा-स्वाहा' सुण पड्यों शब्द मन्त्रां को।
जन्मोत्सव रह्या मनाय खुशो दिल म्हांको ।। १ ।।

जद हुयो एक व्याख्यान, कह्यो, चित लाओ।
विद्या पढ़ जाति-सुधार करो सुख पाओ।।
रेजो तन धारो, खोटी रीत हटाओ।
तज भूँडा गीत, सुगीत सुन्दरी गाओ।।
बन शीलवती, सन्मान करे जग थाँको।
जन्मोत्सव रह्या मनाय खुशी दिल म्हांको ।।२।।

अब अग्रसेन महाराज तणी असवारी।
हाथी घोड़ा सँग पैदल रैयत सारी।।
इक्डंक्यो अटल बजाय नोपतां भारी।
इण भांति शहर में धूम छत्र अधिकारी।।
पग पग पर स्वागत करे गुणो जन ज्यांको।
जन्मोत्सव रह्या मनाय खुशी दिल म्हांको ।।३।।

कोई दे आदर मान, पान दे कोई।
कोई फूलां का हार, सुपारी कोइ।।
कोई मणि माणिक, मोहर अँगूठी कोई।
दे कोइ नकद नारेल, एलची कोई।।
गुण गान करे कवि कोविद कोई ज्यांको।
जन्मोत्सव रह्या मनाय खुशी दिल म्हांको ।।४।।

रहे अग्रवाल परिवार उमंग मन मांही।
चौंतरफ नगर में अग्रसेन छवि-छाई।।

कोई मिल घालो गोठ हरष अधिकाई।
कोई मन आनंद मानत बाँट बधाई॥
धन अग्रसेन-संतान काम यो थांको।
जन्मोत्सव रह्या मनाय खुशी दिल म्हांको ॥५॥
जनता कै कवि को विनय ध्यान में आवे।
उत्सव यो आई साल मनायो जावे॥
सब कर आपस में प्रेम बैर बिसरावे।
गुण मान पूर्वजों का यश कीरति गावे॥
सुन 'ज्ञानवती-मांडव्य' हाल जलसा को।
जन्मोत्सव रह्या मनाय खुशी दिल म्हांको ॥६॥

श्रद्धा सुमन

हे दिव्य पुरुष तुम अग्रगण्य, हे सूर्य वंश आलोक प्रखर।
क्षत्रिय-कुल-भूषण ज्योतिर्मय, हे दिग्विजयी तुम वीर प्रखर ॥१॥
कितनी ही विजय प्राप्त करके, युद्धोन्माद से मुख मोड़ा।
अपनीया दया अहिंसा को, बन वैश्य क्षात्र पद को छोड़ा ॥२॥
तुम लोकतंत्र के सूत्र धार, राजर्षि लोकप्रिय जन नायक।
गण राज्य बना था अग्रोहा, शासक थे उसके गणनायक ॥३॥
तुमने ही जग को सर्वप्रथम, शुभ समाज की शिक्षा दी।
विख्यात किंवदन्ती में है, रुपया ईटों की परिपाटी ॥४॥
समता भ्रातृत्व भाव अनुपम, अपने पुत्रों को सिखलाया।
अब डेढ कोटि तव सन्तति ने, उन आदर्शों को विसराया ॥५॥
हमको सम्बल दो आदि पिता, हे पथ प्रदर्शक, पथ दिखलाओ।
जागे स्व जाति-अभिमान पुनः वरदान हमें शुभ ऐसा दो ॥६॥

अग्रोहा

स्नेह प्यार आदर्शों की जिस ठौर त्रिवेणी बहती थी,
गौरव गाथा उस धरती की इस सन्दर्भों में कहती थी,
अग्रवाल कुल गरिमा के थे छत्र जहां पर तने हुए;
उसको समान हक मिलने के कानून जहां थे बने हुए।

माटी तक जिसकी चन्दन है

गौरव गरिमा से सराबोर, माटी तक जिसकी चन्दन है।
उस पुण्य भूमि अग्रोहा को, सबका श्रद्धानत वन्दन है॥
नजरें नीचे झुक जाती हैं अवरूद्ध कंठ हो जाता है।
अग्रोहा का चिन्तन करते तो, साँस गले तक आता है॥
यह अग्रवंश का तीर्थधाम जो सदियों से वीरान पड़ा।
वह आज धूल में ढका हुआ जिसका अतीत था स्वर्ण जड़ा।
जहां ऋद्धि सिद्धियाँ बसती थीं, क्या फिर से उसे बसाओगे॥
तुम तनिक उलीचो माटी को, इतिहास तड़फता पाओगे।

दहेज

रिवाजों की हमारी कौम में हालत नहीं बदली,
बुरी रस्में बुरी चालें बुरी आदत नहीं बदली,
समय बदला जहां बदला, नया हिन्दुस्तान बदला,
मगर लड़की मां और बाप की किस्मत नहीं बदली।

दहेज

जाते जाते दुकान पर गए सेठजी हाँफ ।
दहेज विषय पर सोचा है गया डाक्टर भाँप ॥

सेठजी कहने लगे सुनो डाक्टर गिरधर ।
शीघ्र इलाज मेरा करो आया हूँ में बचकर ॥

मेरा पेट है लग रहा ज्यों जंगल की केज ।
शीघ्र ही सारे मैं करूं बतलाओ परहेज ॥

सुनो सेठजी बात मेरी देकर के कुछ ध्यान ।
अमल शीघ्र यदि करें हो जाय कल्याण ॥

सेव, केला, मोसमी पपीता और अंगूर ।
देशी घी को दूध में छक कर पिओ हुजूर ॥

छक कर खाओ छक कर पीओ करना होगा एक परहेज ।
इच्छा मन में मत रखना, मांगन की तुम दहेज ॥

हमारा है

केसरीया ध्वज हाथ, पगड़ी कसूमल माथ,
अंगूरी अंगरखा पै कसना रतनारा है ।
शरबती दुपट्टा में म्यान आसमानी कसी,
मोती सी धोती का काला किनारा है ॥
हरी हरी मखमली जूतियाँ जरी को काम,
चन्दन गलीचा पै सलमा सितारा है ॥
दूधिया चंवर जांके अट्ठारह कंवर :
ऐसा ठाठ बाट वारा अग्रसेन जी हमारा है ॥

राजन के राज रहे शीश पर ताज रहे,
मूंछन की लाज रहे, साज सजे सारा है ।
संग में समाज रहे, भाट जसराज रहे,
जाति पर नाज रहे सबको उबारा है ।।
श्वसुर है नागराज, मित्र जाँके देवराज,
वाहन है गजराज, बांज बंधे द्वार है ।
नगर बसाया वर सिंहनी से पाया,
कुलदेवी महामाया, ऐसा राजन हमारा ।।

शीश पर छत्र रहे, कीर्ति सर्वत्र रहे,
द्वार पर बज रहे नौवत नगारा है ।
हृदय में शक्ति रहे भक्ति अनुरक्ति रहे,
धर्म कर्म मर्म हमें प्राणों से प्यारा है ।
रहे है तराजू हाथ, दान रहे साथ साथ;
कान में कलम रहे कमर में दुधारा हैं ।
अमर इतिहास रहे मुख पर हास रहे,
जय अग्रसेन रहे नारा हमारा है ।।

अग्र रहे वीरता में धीरज गंभीरता में,
बापुरो सिकन्दर कहा देवराज हारा है ।
अग्र रहे ज्ञानियों में दानियों में मानियों में
हरिहर लक्ष्मी का हम को सहारा है ।।
ईट ओ रुपया के दिवैया हर अतिथि को,
निर्धन की नैया को दीन्हा किनारा है ।
अग्र है समग्र देश में त्रिलोक सर्वदा से,
याही हेत अग्रवाल नाम भी हमारा हैं ।।

अग्रसेन—गरिमा

तुम अग्रज्योति की प्रथम किरण
तुम साम्य वाद के प्रथम धाम
तुम वैश्य वंश के प्रथम राज
तुम बांधवता की प्रथम शोध

तुम द्वापर युग में जन्मे थे
तुम देव युद्ध में चमके थे
तुम अचल रहे हिमगिरी सम थे
तुम मरुधर में सागर सम थे

तुम ने फहराई कीर्ति ध्वजा
तुम से की सन्धि पुरन्दर ने
तुम बने मित्र पांडव कुरु के
तुम ने देखा उत्थान पतन।

तुम नाग वंश के मान्य बने
तुम लक्ष्मी के वरदान बने
तुम घन कुबेर पति कहलाए
तुम को पाकर हम धन्य हुए।

श्री अग्रसेन साहित्य परिषद को ११) रु. आर्थिक सहयोग देने वाले महानुभावों की नामावली

१. सर्व श्री श्रीकृष्णजी जिन्दल
२. ,, गोपीलाल जी ऐरन
३. ,, किशन लालजी जिन्दल
४. ,, राम अवतारजी गोयल
5. ,, दिनेश कुमारजी गर्ग
६. ,, राजेन्द्र प्रसादजी गर्ग
७. ,, रमेशचन्द्रजी जिन्दल
८. ,, मोहन लालजी सांघी
९. ,, राम निवासजी ऐरन
१०. ,, हंसराजजी गोयल (डाकवाले)
११. ,, लक्ष्मी नारायणजी सिंहल (मंदिरवाले)
१२. ,, द्वारका प्रसादजी ऐरन
१३. ,, त्रिलोक चन्दजी सिंहल 'आजाद'
१४. ,, राधेश्यामजी गोयल 'लालाजी'
१५. ,, ओम प्रकाशजी बंसल अ. न्यायाधीश कोटा
१६. ,, नोरत मलजी ऐरन
१७. ,, दुर्गा प्रसादजी गर्ग
१८. ,, हजारीमलजी लक्ष्मी नारायणजी मित्तल
१९. ,, श्रीमती बिरदी बाई W/o. प्रभुदयालजी अग्रवाल इन्दौर
२०. ,, गोविन्द नारायणजी डागी A. En. R.S.E.B.
२१. ,, बिरदी चन्दजी चान्दमलजी जिन्दल
२२. ,, इन्द्र प्रकाशजी दवाई वाला
२३. ,, प्रेम रतनजी नागेलिया
२४. ,, पदमचन्दजी मिश्रीलालजी जिन्दल
२५. ,, भगवती प्रसादजी सिंहल
२६. ,, बिरदीचन्दजी चान्दमलजी जिन्दल
२७. ,, ओम प्रकाशजी मित्तल
२८. ,, नाथूलालजी गर्ग
२९. ,, ज्वाला प्रसादजी मन मोहनलालजी बंसल
३०. ,, मिश्रीलालजी गर्ग (ग्राम सेवक)
३१. ,, साँवल रामजी जिन्दल ट्रस्ट नसीराबाद

अग्रवालों के १७½ गोत्र

पूज्य श्री अग्रसेनजी महाराज को पुत्रकामेष्टि यज्ञ कराने वाले १८ महर्षियों के नामों पर माने गये गोत्रों के शुद्ध व प्रचलित रूप।

शुद्ध	प्रचलित	शुद्ध	प्रचलित
१. गर्ग	गर्ग	१०. तांडेय	तुंदल
२. गोभिल	गोयल	११. मांडव्य	मंगल
३. मैत्रेय	मित्तल	१२. वशिष्ट	विंदल
४. जैमिनि	जिन्दल	१३. धौम	ढिंगल
५. शांडिल्य	सिंगल	१४. मुदगल	मुधकल
६. वत्स्य	बांसल	१५. धान्याश	टेरन
७. और्य	ऐरन	१६. तैतर्य	तायल
८. कौशिक	कांसल	१७. नागेन्द्र	नागल
९. कश्यप	कंथल	१८. गौतम	गौरा ❀

(❀ आधा गोत्र)

दहेज — अभिशाप है।

मुद्रक : जगदम्बा प्रिण्टर्स, सदर बाजार, नसीराबाद